इन्टरव्यू २७

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम मोहम्मद असलम है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र लगभग 32 साल है।

प्र: कितने साल से आप कर रहे हैं बुनकारी ?
ज: अरे हम तो इसी में पैदा ही है।

प्र: बचपन से ही ?
ज: हां बचपन से ही समझ लिजीए।

प्र: आप बुनाई का ही काम करते हैं या बुनकारी से सम्बन्धित कोई और काम ?

ज: नहीं बुनकारियों का काम करते हैं।

प्र: आप अपने करघे पर करते हैं ?
ज: हां, अपने करघे पर अपने कारखाने पर और जैसे कि जो कमजोर लोग है तो उनका माल लेकर जैसे कि बेचना कुछ मुनाफा मिल जाये अब जैसे कि ये वखत हम लोग जो रूमाली काम कर रहे हैं उसके एक रूपया प्रति पीस मिलता है और सौ ठे बिका तो सौ रुपया होगा, यही हिसाब से होता है।

प्र: अच्छा आपके पास तो पावरलूम भी है ?
ज: हां पावरलूम है, पावरलूम में ऐसा है कि कभी तो बहुत कमजोर हैं दूसरे का ताना बाना लिया कर बीन रहे हैं, मजदूरी का काम है समझिये कि अब कैसे कि 60-70 हजार रुपया इकट्ठा किये और उसके बाद उसमें दस हजार और चाहिए उ तो हमारे पास है नही, इसलिए दूसरे का मजदूरी करना पड़ रहा है, तानी बाना लिया के, उसमें मजदूरी तो लोग देते हैं।

प्र: यानि अपने ही मशीन पर आप मजदूर है ?
ज: हां अपने मशीन पर मजदूर है।

प्र: उसके अलावा दस करघा भी तो है, आज पास, उस पर भी काम चल रहा है ?
ज: हां वो भी चल रहा है।

प्र: उस पर आप खुद बुनते हैं या मजदूर रखे हैं ?
ज: यदी मजदूर रखे हैं। हम लोग के पास मजदूर है करीब-करीब 15-20 मजदूर है, लेकिन बस ये है कि इतना ज्यादा काम न किया जाय तो कम पड़ा जायेगा कम्पटीशन इतना ज्यादा है कि कुछ मिल नहीं पायेगा। समझिये काम ज्यादा करना पड़ रहा है, कि कम से कम परिवार का खर्चा चल जाये, अब तीन सौ रोज का खर्चा है सब इन्तजाम करना।

प्र: तीन सौ का किस चीज का खर्चा है ?
ज: घर पर ही खर्चा जो है और साथ में एक ठे शादी करना पड़ जाता है।

प्र: घर की जिम्मेदारी आप पर ही है ?
ज: हां।

प्र: कितने लोग है घर में ?
ज: हम लोग कुल बहन भाई 12 जने हैं, और 10 बहन है यही भाई है हम लोग, सात बहन की शादी हो चुकी है, तीन बहन की शादी बाकी है और दो भाई की भी शादी हो चुकी है। अब हमें चार बच्चे हैं, 2 लड़की, 2 लड़का है।

प्र: दूसरे यदि..?
ज: वो पावरलूम चला रहा है, हम सब साड़ी का काम देख रहे हैं।

प्र: खाना-पीना सब साथ में ही है ?

ज: हां सब साथ हैं।

प्र: आपके पास हथकरघा कितना है ?
ज: यही 15 ठे अपना करघा है सब पर मजदूर है, गांव के लोग हैं, सब किसान हैं, वो अपना खेती बाड़ी भी करते हैं जब खाली होते हैं तो अपना देखते।

प्र: तो उसपर हमेशा काम नहीं रहता हैं ?
ज: नहीं हमेशा काम रहता है, पर वो अपने हिसाब से चलते है, उनके पास खेत है, खेत से भी अनाज आना चाहिए और मेहनत करते हैं तो पैसा आता है।

प्र: आपके ही गांव के हैं वो लोग ?
ज: हां सब अगल बगल के है ज्यादा दूर के नहीं बस यही 15 कि मी के अन्दर मे हैं।

प्र: उनकी कितनी मजदूरी होती है ?
ज: उनकी मजदूरी तो वही 600 रुपया मजदूरी होती है।

प्र: एक महीने का या एक साड़ी का ?
ज: नहीं एक साड़ी का 600 रुपया मजदूरी होती है, जो सस्ती बना रहा है, उसकी मजदूरी हम बता रहे हैं, और जो वजन वाली साड़ी बनती है, तो हमारे यहां नहीं बनती है, तो उसकी तो 1000-1200 रुपया होता है।

प्र: तो आप साड़ी जो बनवाते हैं उसके तानी और बाना आपका होता है या उनका ?
ज: नहीं सब कुछ हमारा होता है, तानी बाना और डिजाइन वगैरह हर कुछ जितना कुछ लगा है, सब हमारा होगा, वो लोग खाली बुनने का काम करते हैं, जितने लोग काम करने वाले हैं, सब लोग हरिजन है।

प्र: हिन्दू है वो लोग ?
ज: हां हिन्दू है।

प्र: हिन्दू लोग भी बुनाई करते हैं ?
ज: बनारस में ऐसा है न कि लगभग 80 प्रतिशत हिन्दू थे काम से जुड़े हुए है और गांव में अधिकतर जितने हैं, सब हिन्दू ही है।

प्र: वो खेती भी करते हैं, बुनाई भी करते हैं ?
ज: हां, बनारस की तो बहुत पुरानी परम्परा है न कि मंदा पर सब मिल-जुल कर काम कर रहे हैं।

प्र: तो एक करघे से आपकी आमदनी कितनी होती है ? लागत हटाकर ?
ज: लागत हटाकर हमारी सौ खकली मान लिजिये है एक साड़ी में सौ रुपया गांव से जो साड़ी आती है जो कारीगर तीन कर लेता है, कोई एक हफ्ता में कोई एक महीना में और हम लोग के घर में जो कारीगर है उनकी खेती तो है नही उनको बीनने से खाली मतलब है, तो महीने में तीन साड़ी बीनते हैं तो महीने का ऐसा है कि समझ लो कि 1500 रुपया महीना कर लेते हैं और गांव वालों को सौ रुपया बढ़ती दिया जाता है, क्योंकि वो धागा-तागा अपने हाथ से बुनते है, तो उनकी बहती दिया जाता है।

प्रः अच्छा पावरलूम पर जो आप लाकर बुनते है, उसका आपको कितना मजदूरी मिलता है ?
जः उसमें तो हमें मिलता है सौ रुपया, एक साड़ी का सौ रुपया मजदूरी और 50 रुपया जो चलाता है पावरलूम उसको दे देते हैं, और 50 अपने पास आ जाता है।

प्रः तो उसका मजदूरी कम क्यों हैं ?
जः ऐसा है वो पावरलूम तो बिजली से चलता है।

प्रः और इसमें तो कई साड़ियां बुन लेते होंगे ?
जः हां और एक दिन में दो साड़ी दो हो जाती है।

प्रः तो एक दिन में 200रुपया हो गया ?
जः हां, मेहनत ज्यादा करना पड़ रहा है कम्पर्टीशन इतना बढ़ गया है मुनाफा कम है, मेहनत ज्यादा करोगे तभी दो चार कुछ पैसा बचेगा। ये वक्त तो यही दौर है।

प्रः अच्छा ये सब मिला जुला कर आपका एक महीने का कितना मुनाफा निकल आता होगा ?
जः एक महीने का 5000 रुपया आ जाता है सब मिलाकर ।

प्रः इतने में परिवार का खर्च चल जाता है ?
जः चल जाता है, बहुत मुश्किल से चलता है।

प्रः पढ़ने जाने वाले लोग भी हैं घर में ?
जः हां, घर में उ ठो बहिन है एक तो 12 तक पढ़ चुकी है अब बढ़ी हो चुकी है, घर पर बैठी है, दो और है, वो बस में पढ़ रही हैं, 12 तक पढ़ के तो भी बैठ जायेंगी, और बच्चे हमारे पढ़ रहे हैं अभी।

प्रः तो वो जो हथकरघा वाली स्थिति खराब होती जा रही है, आपके पास पहले भी 15 ही करघे थे, या और ज्यादा थे ?
जः नहीं और थे, 60-80 करघे थे, लेकिन दौर ऐसा है कि धीरे-धीरे वजन साड़ी का गिरता गया, सबको सस्ती साड़ी चाहिए, उसी लिए धीरे-धीरे करघा भी बन्द होता चला गया, मुनाफा भी कम हो गया तो करघा तो धीरे-धीरे बन्द होना ही है, वजह ये न है कि एक साड़ी में ठीक 100 मिल रहा है, अगर एक साड़ी खराब आ गयी, जो साड़ी हम 1800 की बेच रहे है तो उसमे हमें 1000 में बेचना पड़ेगा, तो पता चला कि चार साड़ी में हम 400 रुपया कमाये लेकिन एक साड़ी अगर खराब आ गयी तो 400 रुपया एकदम से चला गया, यही वजह से कारखाना बन्द होता जा रहा है बराबर हाथ वाला और पावरलूम की जो डिमान्ड बंद गयी है तो जिसके पास पैसा है, तो लगा रहा है, जिसके पास पैसा नहीं है उ कोई भी व्यवस्था अपना करेगा।

प्रः तो आप बाकी करघा बेच कर पावरलूम लगायें हैं ?
जः नहीं, करघा बेचते नहीं है, उसकें ऐसा है कि बहुत सा जुगाड़ आदमी करता है, घर में बहुत सी चीज ऐसी है कि आदमी उसको बेंच में लगा लेता है कि चलो जब कमाई होगी तो बना लेंगे, ऐसी ही किसा फिर पावरलूम लगाये हैं, हम तो ऐसा ही किया, फिर यदि को भाड़ी पड़ी तो जिसका लिया रहा उसका दे दिया।

प्र: तो बाकी जो 80 करघे थे तो आपके बेंच दिये या रखे हैं ?
ज: सब पड़ा है, सामान रखा रहता है तो खराब हो रहा है, खाली पड़ा है।

प्र: आप उस पर मजदूर क्यों नहीं रखते ?
ज: मजदूर तो ऐसा है न कि मजदूर जो रहे, उमर हो गयी है उनकी, अब उनके जो लड़के है तो पढ़ लिख रहे हैं, कोई किसान है तो कोई दूसरा काम कर रहा, कोई नौकरी कर रहा है, ऐसा है हमारे यहां करघे जो बिनती रही सब पुराने-पुराने कारीगर हैं, 25-30 साल से बिनने वाले हैं लगातार अब उमर हो गयी तो चले जा रहे हैं, दुनिया के, उनके बच्चे दूसरे काम कर रहे हैं।

प्र: तो करघा बेच क्यों नहीं आय ?
ज: बिकता नहीं है न ये।

प्र: पर कई जगह तो हम सुने हैं ?
ज: नहीं पावरलूम बिकता है, करघे में ऐसा है कि कोई सामान इधर-उधर हो गया 10-12 सौ की चीज है 200 रुपये में बिकगी, तो जरूरत क्या है, और उसका पाई-पाई अलग-अलग बेचेंगे तो कोई फायदा नहीं है। वो रखा-रखा खराब हो जायेगा लेकिन काम में नहीं आने वाला है, अब देखिये इन्ही में यहां मशीन पड़ी है, करीब 40-50 मशीन, पर कोई काम की नहीं है। हमें खुद कह रहे हैं ले जाओ, पर हमें जरूरत रहेगी तब न ले जायेंगे।

प्र: अच्छा ये बताइये अहमद भाई कि आप तो बहुत साल से लगे हैं इस काम में तो आपकी स्थिति में सुधार हुआ है या गिरावट आयी है ?
ज: पहले से तो बहुत गिरावट आयी है।

प्र: पावरलूम लगाने के बाद भी ?
ज: हां तो अभी तो साल भर ही हुआ है पावरलूम लगाये, धीरे-धीरे कर्जा तो खत्म कर दिये हैं, अब यही है कि खाना पान सही ढंग से हो जा रहा है अभी मतलब तरक्की नहीं हो रही है।
(अवरोध- कैसेट 4, साथी नाटी इमली)
करघा लगाने के बाद, दो पावरलूम जो लगाये तो कर्जा लेकर, पैसा लेकर अब पैसा तो पूरा दिया गया अब खान-पान सही ढंग से हो रहा है। ऐसा न हो कि धंधे में सुधार सब हो जाय, खाली सरकार की जो नीति आप की ऐसी है उल्टी, आप का जो हिन्दुस्तान है न ये नेता लोग के बहकावे में आ जाती है, है कि नहीं।

प्र: हां ?
ज: उल्टी सीधी बात खाली लोग को बहका रहे हैं, इसलिए कि मतलब कि जो आगे जो काम है, जो जरूरी काम है, उस पर में लोग का स्थान न जाय और नेता लोग अपनी उल्टी सीधी बात, घुमा फिरा कर खाली लोगों को गुमराह कर रहे हैं।

प्र: लेकिन ये जो बदलाव आया है, उसका कारण क्या है, बुनकारी में जो बदलाव आया है उसका कारण क्या है, पावरलूम ज्यादा आ जाना ?
ज: अवरोध
ऐसा है न कि पूरे वर्ल्ड में जो है, मतलब ये वक्त फैशन का दौर चल रहा है, जगह-जगह फैशन शो हो रहा है, फैशन टी वी में देखकर जो है, अब माटी साड़ी का जो हिसाब-किताब बहुत कम है, अब कोई शिफॉन, हल्की साड़ी

यही सब चाहिए पैसे में भी कम होना चाहिए और देखकर भी अच्छी लगना चाहिए यही वजह है। खाली जब बनारस ही नहीं पूरा वर्ल्ड ही मन्दा है।

प्र: पूरानी चीजे गायब हो गयी है ?
ज: हां यही समझ लीजिये, सबको सस्ती साड़ी और हल्की साड़ी चाहिए।

प्र: रेशम-वेशम जो मंहगा हुआ, उसका असर नहीं हो रहा है इसपर या हो रहा है ?
ज: रेशम का कोई बहुत ज्यादा खपत भी ये वक्त नहीं है, और रेशम वाले भी रो रहे हैं, पहले 100 परसेन्ट जहां खरीदारी की आज 25परसेन्ट भी नहीं हो रही है।

प्र: तो अब लोग पावरलूम वाली लेना ज्यादा पसन्द कर रहे हैं साड़ी ?
ज: हां पावरलूम वाला लेना ज्यादा पसन्द कर रहे हैं, सस्ता भी पड़ती है न जहां ऐसा 1000 से ऊपर पड़ेगी हाथ वाली और वो वाली 500-600,700 में हो जा रही है, यही वजह है।

प्र: मतलब बनारसी साड़ी की बिक्री घटी है, ये आप बोल रहे हैं ?
ज: बहुत घटी है, अच्छा समझ लो कि 65परसेन्ट हैण्डलूम की साड़ी में गिरावट आ गयी है।

प्र: अच्छा ये जो स्थिति आ गयी है ? उससे निपटने का कोई उपाय नजर आता है कि नहीं ?
ज: नहीं, ऐसा अभी तो कोई नहीं समझ में आ रहा है, कम से कम तो दो साल अभी लगेगा, वजह ऐसा है कि एक चीज जब कोई आदमी पसन्द वाला है तो अगला देखता है कि यार हमको भी ये साड़ी लेना है, तो दूसरे साल तो साड़ी इस्तेमाल करता है, तीसरे साल उससे कम लोग इस्तेमाल करते हैं, कम से कम तीन साल से गिरावट रहेगी, तीन साल के बाद ही हैण्डलूम का कुछ बयार आयेगी नहीं तो तीन साल में पहले अभी रोई उ है नहीं।

प्र: तो इससे उसका तीन साल बाद अपने आप ही हो जायेगा ?
ज: हां अपने आप होगा लेकिन तीन साल के बाद।

प्र: लेकिन लोग बता रहे है कि 10साल से लगभग यही गिरावट चल आ रही है ?
ज: हां दस साल से गिरावट चल रही है लेकिन अब ऐसा हे कि उछाल आयेगा तीन साल के बाद।

प्र: आपको उम्मीद है ?
ज: हां आयेगा जरूर इसलिए कि हर चीज में देखा गया है जैसे कि कल बहुत ज्यादा सर्दी रही, एक महीना को सर्दी कल इकट्ठे पड़ गयी, अब आप एक बैक धूप निकल गयी तो यही रोज होता है कि आप की साड़ी का डिमांड बहुत ज्यादा है लेकिन दो साल में सुधार आ जायेगा।

प्र: अच्छा आप लोग कोई समिति बनाने का नहीं सोचते ?
ज: नही, समिति बनाने का तो यही सोचते हम लोग। अच्छा आदमी नहीं मिल रहा है। जो आपकी, आज समिति करता है, तो उ अपने फायदे में लग जाता है, तो भइया हर आदमी सोचता है अपने हाथ का काम कर लो, एक पैसा दो पैसा जो मिले सही है। अगर कोई के आगे रखेंगे हम, तो वो अपने ही फायदे के लिए काम करेगा।

प्र: इसके पहले समिति बनी है यहां पर कोई ?

ज: समिति नहीं इण्डियन हैण्डलूम की तो है ये, कॉपरेटिव है लेकिन उससे कोई फायदा नहीं है बुनकरों का।

प्र: क्यों उससे फायदा क्यों नहीं है, लोन मिलता है, समिति बना ले तो कुछ सुविधायें मिलती है रेशम सस्ता मिलता है ?
ज: ऐसा है, उसमें जो अगवा लोग है न आगे पहले तो अपना पेट भरते है, अब जो गरीब तनका के लोग हैं, उ ऐसा है कि उसमें बहुत लोग ऐसा है कि आगे ऐसी ऐसी कठिनाई रख देते है न कि गरीब तो आगे जाते ही नहीं लेने और कितने उसमे है हैण्डलूम और कॉपरेटिव के मेम्बर हैं, जो बड़े नोग उ सब अपना ले लेते हैं, उल्टी सीधी साहब लोगों से कराके जो है कि सब अपने आप की खुद ही ले लेते हैं।

प्र: अच्छा अब लेकिन आप बता रहे हैं कि तीन साल बाद फिर से उछाल आयेगा, बुनकारों की स्थिति खराब चल रही है लेकिन जो उसका व्यवस्था करने वाले लोग हैं, यानी गद्दी वाले लोग हैं उनकी स्थिति में कई बदलाव आया है या नहीं आया हैं ?
ज: उनकी भी स्थिति खराब हुई है, अब ऐसा है कि जो पहले हैण्डलूम का काम करते रहे तो धीरे-धीरे पावरलूम का काम करने लगे, इसलिए धीरे-धीरे वक्त के हिसाब से नहीं चलोगे तो खाना पीना मुश्किल हो जायेगा इसलिए गद्दीदार लोग की हैण्डलूम से हटकर अब पावरलूम का काम करने लगे हैं, अब उससे ऐसा है कि पावरलूम के काम मे 10 रुपया 15 रुपया हमें मिल जाय तो बहुत है, जो खरीद कर बेचते हैं उसके 10-15 ही रुपये का खेला है बस।

प्र: अच्छा अस्लम भाई आप पावरलूम तो लगा ही लिये है और हथकरघा भी आपका चल रहा है, ये दोनों ही आप आगे बढ़ायेंगे या हथकरघा छोड़ कर एकदम पावरलूम में आ जायेंगे ?
ज: नहीं जैसे स्थिति आगे रहेगी।

प्र: लेकिन आपकी इच्छा क्या है ?
ज: इच्छा तो ऐसा है कि वक्त के हिसाब से चलना पड़ रहा है, अगर हैण्डलूम बढ़िया चलेगा और पावरलूम कमजोर हो जायेगा तो पावरलूम को बन्द कर देंगे और फिर हैण्डलूम पर आ जायेंगे।

प्र: जिसमें मुनाफा ज्यादा होगा ?
ज: हो अगर हैण्डलूम में उछाल नहीं आया तो पावरलूम पर आ जायेंगे फिर से यही सब है।